

१ श्रीवाग्मणि ॥ २ श्रीमाहाधवया मंडन ४ ॥ गिर ॥

४४ पञ्चवक्त्र पूजा



ASHA ARCHIVES 3308

सिखाहन ३

ॐ नमः शिवाय ॥ अथ यवकुपूजा ॥ सथा जातमिदं यदा र्थाय चि
मव कुपूजय नमः ॥ सथा जातं निसि सद्यः षि ४ वक्रा दवता गायत्री कन्द ४
॥ अथ यवकुपूजय विवीतं सुखि नृपात्मन वक्र ॥ लाङ्गो नमः ॥
ॐ वृमूडा दर्शनं ॥ सथा जातं यथा मि सथा जातय वेनमानमः ॥
रुवरुवेनागिरुवे रुजसमायरुवाहवाय नमः ॥ सिद्धिर्वृद्धिर्भुक्ति
सिद्धिर्भुक्ति ॥ स्वधा परा ॥ सथा जातकलापगा अथो वयविकी

लिगा ॥ अथ गान्ते ॥ अथ यवकुपूजय हंसवाहनं ॥ सिद्धिर्भुक्ति
कोत्या लि ॥ अथ गान्ते ॥ अथ यवकुपूजय हंसवाहनं ॥ सिद्धिर्भुक्ति
कीव रुनय रु रु ॥ अथ गान्ते ॥ अथ यवकुपूजय हंसवाहनं ॥ सिद्धिर्भुक्ति
अथ गान्ते ॥ अथ यवकुपूजय हंसवाहनं ॥ सिद्धिर्भुक्ति
लोकन ॥ अथ गान्ते ॥ अथ यवकुपूजय हंसवाहनं ॥ सिद्धिर्भुक्ति
यनमः ॥ वाममद्यमि मरु ॥ वामदवायमि वामदवमि ४ विः

बुद्धवगाजगतीकृत्यः कृष्णवर्णमग्नूतवाहनैडरुनवकुं आय
 कर्तुं अमृतमृयात्मन विष्णु कडेडोनमः ॥ यममृडादगर्भे ॥ वाम
 देवाय नमः अश्विनय नमः ॥ पुष्पाय नमः वृद्धाय नमः ॥ कालाय न
 मः ॥ कलविकलनाय नमः ॥ वलाय वलविकलनाय नमः ॥ वलप
 मधनाय नमः ॥ सर्वरुग्दमनाय नमः ॥ मनामनाय नमः ॥ ॥ नेडा
 नकावति ॥ ॥ पात्या काभासं जीविनी प्रिया ॥ वृद्धिः क्रिया वधाणी

२

चशामनीमाहिनीकृता ॥ वामदेवकलाश्रुतायथादणवनानने ॥
 उत्तमीगनयनेत्ययुजयद्रुतधर्ज ॥ सर्वदायविनाशमप्राप्यग
 प्रियसंयदा ॥ ॥ लोनेकं कमपिगुलंसमित्तकं व्यापाडुगंतुं कृतं मुवि
 कयकटाकविकलसत्क ॥ ॥ त्यक्तं सद्यः ॥ ॥ याश्वदेमिदं सुधाप
 रुसिर्गनीलातकालं कृणु वामं सिद्धिसूत्रासूननमिर्गवकुं रुन
 स्फारुनं ॥ ॥ अथावायदुदयदकिर्णवकायनमः ॥ ॥ यागवृद्धमरुः ॥

ज्ञानमूलादगर्गनी ॥ अधावस्था यथावस्था अधावस्था वगवस्था ॥ सर्वक ॥
 सर्वसर्व स्थानमस्तु नू द नू यत्य ॥ गभाभाहा कया कृष्ण व्याधि मृत्यु
 ॥ रुधा कृष्ण ॥ अधावस्था कला अगा अधो व पत्रि की र्ति ना ॥ नीला त्य
 ले ॥ कनवीने ॥ यू ऊ य त्क म स ति गी ॥ सर्ववा धा विना गाय म्ज्ञानभा क
 प्रदायक ॥ कालाग्रुमना अ नयु ति निर्म व्या क लि पि ल क र्ण वा
 ल न्दु यु ति का टि दं द्यु य ग लं वा ल न्दु यु ति का टि दं द्यु य ग लं प्रा हा

3

सिगा थर्वली ॥ स र्वा रु ग क ला स रु यु म लि लि ॥ का या ल मा ला ध रं ध्या
 नै द कि ल मी ध्व न स्य व द नं कु रं ग नो डं म र्व ॥ ॥ तत्पू र्वा म र्व पू र्व
 व कु य न म ॥ अ त्पू र्व म कु ॥ अ त्पू र्व या य ति तत्पू र्व म वि ॥
 रु डा द व ना गाय णी रु द ॥ यो ग व र्ण वा य म ल्व अ त्थ वा रु नं यू र्व व
 कु रं ग न्या त्म न आ दि त्या य डं हो न म ॥ क व व मू डा द र्ग नी ॥ तत्पू
 र्वा य वि म रु म रु द वा य धी म हि ॥ त न्ना रु द ॥ प र्वा द या न् ॥ नि

य२

यावुयाहसा नाम सदा निवहा विल्ले ४ कनक मूये ज्व पूजयह
 उरु वैरु धा ॥ पूजनीय यय लन सोखा मा कय दा यकी ॥ व्य काः
 वाक गुलाग वं च विमलं वद्विग ल्वात्मकी ॥ वदाय कन मकु गं
 सु विमलं ध्याय सदा या निहि ४ सर्वरु त्व मधी ज्व त्व मव ली सुः
 का निरु म्प र्ण गं कं यं च ममी ज्व त्व स्य वद न र्व व्या पिगं कामयी ॥
 यं वदा न नृप मगु ले ४ स पूजिगं वामये ४ पूजा ग म्पूज नागय

५

ध्याव कले न्नाग म्पूजाय चिगं । निरु रान स रुप्र दी फि किन ले ४ का
 ला निरु दा यमं ग सदा न क रं न मा मि स ग रं पा ना ल व छं म्पूख ॥ प्र
 पा वा नृ ल म्पू र्ण व व नी ग र्ज थ पू र्व म्पू र्व वा था द्द निग मा न नै गुः
 रु क रं य पू र्ण व र्ण ग प्र दं । व क्क क व ल म व र्ण व न्नि रं ग था नि नां म
 व रं ग रं द य न मा त्म नृ प म खि ल्म ल र्ण ग पि र्ण ल क रं ॥ ए ना नि व
 छ व द ना नि म रु ज्व न स्य थ की रु य कि म नृ जा ४ स ग रं प र्ण ग ।

मघा विष्णु न विद्या तनना ऊहसा ४ सीसा नसागर रुय विगन नि
याने ॥ ॥ ५५ कि रु न स व कु धान रु कि ४ समा का ॥ ॥ श्री नाम नाथ
लक्ष्मिनि ॥ ॥

ASHA ARCHIVES 3308